दिनांक :- 13-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- इतिहास

इकाई :- पाँच

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- बॉक्सर विद्रोह

मंचू सरकार की सहयोग - विद्रोह दमन में मंचू सरकार ने कोई उत्साह नहीं विदेशियों का साथ दिया। 24 मई 1900 की एक घोषणा में कहा गया, विद्रोहियों में अच्छे और बुरे दोनों तत्व हैं। पीकिंग के बाहर वाले अनेक विद्रोहियों को विद्रोह बन्द कर देने के लिए आज्ञा दे दी गई है। इसी तरह की अन्य घोषणाएँ निकाली गई। जिनमें विद्रोह दमन की चर्चा थी। इन घोषणाओं के पीछे मंचू सरकार का अपना स्वार्थ निहित था।

वह अपनी गद्दी अक्षुण्ण रखना था तथा विद्रोहियों के क्रोध का शिकार बनना नहीं चाहता था। इस संकट-काल में भी उसकी आँखें नहीं खुली। उसने विद्रोहियों के साथ विश्वासघात किया और विदेशियों के साथ अपवित्र गठबन्धन किया। तैपिंग विद्रोह के समय भी यही बात हुई थी। अतः उस विद्रोह की तरह बॉक्सर विद्रोह भी दबा दिया गया। उपयुक्त कारणों से बॉक्सर विद्रोह असफल रहा। किंतु उसकी आत्मा जीवित रही। 1911 में चीन में क्रांति हो गई और मंचू राजवंश का पतन हो गया।

परिणाम

(1) विद्रोह दमन - बॉक्सर विद्रोह की खबर यूरोप पहुँचते ही सब देशों ने अपने अपने देशवासियों की रक्षा के लिए चीन में सेनाएँ भेजना शुरू कर दिया। जहाँ जहाँ विदेशी धर्म प्रचारकों और देशी ईसाईयों की हत्या हुई थी वहाँ वहाँ इन सेनाओं ने जाकर अत्याचार किया।

Scanned with CamScanner

(2) बॉक्सर संधि- विद्रोह दमन के पश्चात 7 सितम्बर 1901 को पशिचमी देशो ने चीन के साथ एक संधि की जिसे बॉक्सर प्रोटोकॉल कहते है। संधि की निम्नलिखित शर्तें थी।

(i) चीन से विद्रोह में क्षतिपूर्ति के लिए 45 करोड़ तारयल देने के लिए कहा गया।

(ii) विद्रोह में भाग लेने वालो को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। जिन प्रांतो में विदेशियो का कत्लेआम हुआ था, उन प्रान्तो के नागरिको को सरकारी सेवा से वंचित करने के लिए पाँच वर्षों तक प्रतियोगिता परीक्षाओ में बैठने से वंचित कर देना था।

(iii) पीकिंग में दूतावास की रक्षा के लिए स्थायी रूप से विदेशी सेना रहेगी।

(iv) विदेशी दूतावास (Tsungli Yamen) के स्थान पर विदेश कार्यालय (Foreign office) खोला जाएगा और सम्राट से मिलने की औपचारिकता समाप्त कर दी जाएगी।

(v) मुकदेन और शांतुंग में विदेशियो के रहने और व्यापार करने

की पूरी सुविधा होगी।

(vii) विदेशी राज्यों के साथ चीन ने जितनी संधियाँ की हैं उनमें समयानुसार परिवर्तन किया जाएगा।

(viii) दो वर्षों के लिए चीन में घटियार गोला-बारूद और युद्ध सामग्री के आयात और निर्माण की मनाही रहेगी।

(ix) जर्मनी और जापान के राजदूतों की हत्या के लिए चीन की सरकार माफी माँगेगी और इसके लिए उसका एक प्रतिनिधि दल बर्लिन और टोकियो जाएगा। जिस स्थान पर जर्मन राजदूत की हत्या की गई थी, वहाँ उनका स्मारक बनाया जाएगा।

उपयुक्त संधि द्वारा एक ओर जहाँ मंचू सम्राट की प्रतिष्ठा घटी, वहाँ दूसरी ओर चीन में साम्राज्यवादी देशों ने अपनी स्थिति सुरक्षित कर ली। मंचू सरकार विदेशियों पर पूर्णतः आश्रित हो गई। मंचू सरकार ने संधि को बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार किया और कहा कि बॉक्सर-विद्रोहियों के चलते ही मंचू

सरकार विदेशियों में मतभेद हो गया था। चीनी इतिहासकार हू शेंग ने मंचू सरकार को निर्लज्ज सरकार (Shameless Government) कहा।

(3) सुधार युग का प्रारंभ — बॉक्सर विद्रोह का एक सुपरिणाम यह अवश्य हुआ कि मंचू शासकों ने महसूस किया कि चीन में सुधारों की परम आवश्यकता है। जब तक सुधार योजनाओं को लागू करके जापान की तरह चीन को आधुनिक राज्य नहीं बनाया जाएगा, तब तक चीन पर से विदेशी प्रभुत्व समाप्त नहीं किया जा सकता। इसी अनुभव के बाद ही राजमाता त्सु-शी ने सुधारों का विस्तृत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सेना, शिक्षा, शासन आदि में महत्वपूर्ण सुधार लाए गए। इतिहासकार क्लाइड के शब्दों में, बॉक्सर विद्रोह ने चीन के भावी राजनीति को काफी प्रभावित किया। इसने मंचू राजवंश के पतन और गणतंत्र के उदय को अवश्यम्भावी कर दिया।

(4) 1911 की चीनी क्रांति — बॉक्सर विद्रोह ने चीन के राज

नीतिक भविष्य पर दूरगामी प्रभाव डाला। इससे मंचू राजवंश का पतन और गणराज्य की स्थापना का समय निकट आ गया। 1911 की चीनी क्रांति का यह एक मौलिक कारण बन गया। चीन के बढ़ते हुए असंतोष, विदेशी अधिकार शोषण के विरुद्ध आक्रोश आदि ने क्रांति का वातावरण तैयार कर दिया। इतिहासकार लाट्टे ने ठीक ही कहा था। बॉक्सर-विद्रोह के फलस्वरूप चीन का राष्ट्रीय ऋण बढ़ गया। उसका अपमान हुआ और व्यवहारत वह एक गुलाम देश की स्थिति में आ गया। इन्हीं परिस्थितियों में क्रांति हुई।

इस प्रकार, बॉक्सर विद्रोह के परिणाम अत्यंत ही सुदूरगामी साबित हुए। इससे मंचू वंश की समाप्ति तथा गणराज्य की स्थापना का समय अत्यंत निकट आ गया। क्षतिपूर्ति के रूप में पड़करोड़ तारल देना था। इससे चीन की आर्थिक व्यवस्था और भी जर्जरित हो गई।

पीकिंग स्थित राजदूत अब चीन के साथ स्वतंत्र राष्ट्र जैसा व्यवहार नहीं करते थे, बल्कि उनकी दृष्टि में अब चीन उनकी कृपा पर आश्रित हो गया। चीन के आन्तरिक मामले में विदेशी राजदूतों ने न केवल हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया बल्कि शक्ति-प्रदर्शन द्वारा हर बात को मनवाने के लिए दबाव डालने लगे। मंचू सरकार की स्थिति अपने देशवासियों के सम्मुख असम्मानीय हो गई।

चीन की क्रांति—

चीन पूर्वी एशिया का एक विशाल देश है। अति प्राचीनकाल में ही यहां के निवासियों ने कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान आदि में आश्चर्यजनक उपलब्धि प्राप्त कर ली थी। चीन का सम्राट ईश्वर-तुल्य समझा जाता था और साम्राज्य स्वर्गीय साम्राज्य (Celestial Empire) माना जाता था। चीन का इतिहास शांग वंश (1523-1027 ई० पू०) से शुरू हुआ। उसके बाद चाऊ वंश (1027-256 ई० पू०) का काल आया तो चीनी सभ्यता है।